मनुवाद की बेडियां तोडे भारत की बेटियां

मनुवाद की मजबूत बेडियां वर्तमान भारत में नारियों को तथाकथित नारी सशक्तिकरण के बावजूद आजाद नहीं होने दे रहा है। मनु ने अपने लोक "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" में अपने समय में ही स्त्री और देवता के सम्बंध का चित्रण कर दिया था। तबसे लेकर आजतक जहां स्त्री की पूजा होती है वहीं ये देवता रहते आये हैं। विशे ा तथ्य यह है कि अनन्त काल से ाोि ात नारी समाज ने कभी भी अपने उपर किये जाने वाले धर्म व्यवहार का विरोध नहीं किया और जिसने कभी कोशिश की तो उसे बदचलन और अनेक संज्ञाओं से कलंकित होना पडा। यह महज आश्चर्य ही है कि जिसके गर्भ से पुरू ा जन्म लेता है उसे कभी दुर्गा, कभी ाक्ति, कभी लक्ष्मी और सरस्वती के नाम से नित दिन उसकी पूजा करने के साथ–साथ यर्थाथ के दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती का बर्बरतापूर्वक दमन भी करता है।

धर्म के आधार पर देखा जाय तो ाायद ही ऐसी कोई पुस्तक या धर्म ग्रंथ पढने को मिलता है जिसमें नारी के अस्तित्व की नि पक्ष वर्णन किया गया हो। चाहे बाइबिल हो या कुरान या फिर वेद सभी नारी को अबला के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं। एक दिलचस्प पहलू यह है कि अतीत के भारतीय जीवन ौली में विशि ट नारियों के लिए नगरवधू, जनपद कल्याणी और क्रीतदासी जैसे पद मान्यता प्राप्त हुआ करते थे और हद तो यह है कि इन पदों पर नियुक्ति के जितने भी किस्से सुनने या पढने को मिलते हैं उनमें नियुक्त किये जाने वाली विशि ट नारी की सहमति की आवश्यकता नहीं होती थी। अक्सर यह पढने को मिलता है कि भारत में नारियों के हर रूप की पूजा की जाती है। मगर यह अर्द्धसत्य ही है।

पांचाली अर्थात द्रौपदी, अहिल्या, तारा, कुन्ती और मंदोदरी को पंचकन्या कहकर पूजने वाला भारत का सनातनी समाज आज तक मनुवाद के बेडियों से नहीं उबर सका है। पिछले कुछ महीनों पहले एक मुस्लिम महिला का मामला प्रकाश में आया था। इस मामले का केंद्र थी गुडिया नामक महिला जिसके पहले ौहर के गुम हो जाने के बाद हुए दूसरे व्यक्ति के साथ निकाह और उसके बाद बच्चे। अचानक कुछ साल के बाद उसका पहला ौहर वापस आता है और गुडिया पर अपना हक जताता है। इस्लाम के पाखंडी मुखियों ने गुडिया की परवाह न करते हुए गुडिया को पहले ौहर के पास लौट जाने का फरमान जारी करता है। इस प्रकार देखा जाय तो नारी चाहे किसी भी धर्म की हो हमेशा भोग्य वस्तु के रूप में ही देखी और समझी जाती है।

वर्तमान के ग्लोबलाइजेशन के दौर में महिलाओं के अस्तित्व को गहरा झटका लगता है। पहले किसी ाहर में एक नगरवधू या जनपद कल्याणी हुआ करती थी और अब तो अखबार के हर पन्ने पर, हर टेलीविजन चैनल पर, सडकों पर लगे होर्डिंगों पर नगरवधूओं की एक भीड दिखायी देती है। इस भीड में ाामिल हर महिला स्वयं को सबसे ज्यादा कामूक और आक र्क साबित करने हेतु प्रतिस्पर्द्धा करती है। यह असल में मनुवाद का संशोधित संस्करण है जिसे महिलायें समझना नहीं चाहती हैं। इस तथ्य का आशय यह नहीं है कि महिलओं को घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए या उन्हें पुरू ाों के समान अधिकार नहीं मिले। समय की मांग है कि महिलायें आगे आयें और समाज के नवनिर्माण में अपना सफल योगदान देकर मनुवादी नारी व्यवस्था के बेडियों को तोडें न कि स्वयं को उपभोग का वस्तु साबित कर सदियों से चली आ रहीं मनुवाद की बेडियों को मजबूत करें।